शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक २२ : नई दिल्ली : ४-१० सितम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ४६ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री आदि श्रमणी ४६, सर्व ९२ सानंद केलवा विराज रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। पर्युषण महापर्व का नवाह्निक कार्यक्रम श्रद्धा, आस्था और अध्यात्ममय वातावरण में सानंद गतिमान है।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

विशिष्ट स्मृतिसभा और अणुव्रत के विशिष्ट उपक्रम (८७२)

जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं
धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं

जरा और मृत्यु के वेग से बहते हुए प्राणियों के लिए धर्म द्वीप, प्रतिष्ठा, गति और उत्तम शरण है।

१ मार्च १९९७, शनिवार। धर्मजी चौपड़ा (गंगाशहर) नहीं रहे। ऐसे अचानक उनका चले जाना गहरा आश्चर्य है। क्या हुआ? कैसे हुआ? क्यों हुआ? भगवान जाने। बड़ा दुःखद संवाद है। कहा गया है

तुम आए जब जगत में, जग हंसा तुम रोए।
ऐसी करणी कर चलो, तुम हंसो जग रोए ॥

लगता है, धर्मजी ने ऐसा ही कुछ किया। विरोधी-से-विरोधी भी उनके निधन से सन्न रह गए। मौत इसका नाम है। गजब कर गए। २७ फरवरी को रात्रि में ही यहां संवाद आ गया था। पर रात को जानबूझकर हमें बताया नहीं। २८ फरवरी को सवेरे ज्ञात हुआ। समझ नहीं सका। सन्देश दिया। सज्जन बाई और परिवार को सान्त्वना देने के लिए समणियों को यहां से गंगाशहर पहुंचने का निर्देश दिया। प्रवचन के समय आगम-पाठ का संकीर्तन किया। सूचना मिली है कि चौपड़ा परिवार बुधवार को आ रहा है। स्मृति सभा की जाएगी।

आज मौन दिवस है। प्राकृत संगोष्ठी में समागत विद्वानों से बोलना पड़ा। पुलिस का शिविर प्रारंभ हुआ। इस शिविर में आर.ए.सी. की बारह बटालियनों के पुलिसकर्मियों को प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान का प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है। जीवनविज्ञान अकादमी, लाडनूं के तत्त्वावधान में आयोजित इस शिविर में अड़तीस पुलिसकर्मी भाग लेनेवाले हैं। ये लोग यहां पन्द्रह दिन प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों का अभ्यास करेंगे। शिविर में मुनि महेन्द्रजी का निर्देशन रहेगा। जैनविश्वभारती, विश्वविद्यालय विद्या और विद्वानों का केन्द्र बन रहा है, अच्छा है।

५ मार्च, बुधवार। धर्मचन्द चौपड़ा की स्मृति सभा में गंगाशहर से सात सौ से अधिक व्यक्तियों का एक समूह आया। सज्जन देवी चौपड़ा, अजय चौपड़ा आदि लेकर आए थे। प्रोग्राम चला। दो घंटे चली स्मृति सभा में अच्छा माहौल बना। सबने माना कि समाज पर यह एक वज्रपात हुआ है। धर्मचन्द चौपड़ा ओजस्वी वक्ता, सुघड़ लेखक, शब्दशिल्पी, कुशल संस्था संचालक, प्रशासन-प्रवीण, अनुशासित जीवनशैली के प्रतिरूप, कलाकार और व्यवस्थाप्रिय व्यक्ति थे। वे जय तुलसी फाउण्ेशन, अ.भा. अणुव्रत समिति, अ.भा. तेरापंथ युवक परिषद और जैनविश्वभारती के पूर्व अध्यक्ष थे। अमृत संसद और नियोजन मंडल के पूर्व संयोजक थे। सर्वाधिक उल्लेखनीय बात यह है कि वे धर्मसंघ और संघपति के प्रति समर्पित श्रद्धालु श्रावक थे।

मुनि दिनेश द्वारा प्रस्तुत महावीर स्तुति से स्मृति सभा प्रारंभ हुई। लूणजी छाजेड़ के संयोजकीय वक्तव्य के बाद अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों की ओर से चौपड़ा को श्रद्धांजलि समर्पित की गई। उनके इकलौते पुत्र अजय चौपड़ा ने गुरुकृपा के प्रति आभार व्यक्त किया। मुनि मधुकरजी ने धर्मचन्दजी की संघीय सेवाओं का उल्लेख किया।

मुनि मोहनजी (आमेट) द्वारा प्रेषित पद्य पढ़कर सुनाए गए। महाश्रमणी कनकप्रभा ने उनका कर्तृत्व उजागर करते हुए एक अच्छी कविता पढ़ी। वातावरण बहुत स्वस्थ बना। पर क्षतिपूर्ति कठिन हो रही है। देखते हैं, कौन सामने आता है।

धर्म-परिवार को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा 'मैं २७ फरवरी की रात सोया था। उस समय मुझे ऐसा लगा कि कोई कुछ कहना चाहता है। लेकिन मुझे किसी ने कुछ भी सूचना नहीं दी। प्रातः उठा तो कुछ समय बाद रतनलाल चौपड़ा आया। उसकी आंखें गीली थीं। उसने रुंधे हुए गले से कहा 'धरमचन्दजी चौपड़ा नहीं रहे।' सुनते ही लगा कि यह क्या हुआ? कैसे हुआ? ऐसे कर्मठ संघसेवी का चले जाना आघात नहीं, महाआघात है। समाज की एक हस्ती, विलक्षण शक्ति असमय में अस्त हो गई।'

अकल्पित संवाद सुनने के बाद हुई प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हुए मैंने कहा 'तत्काल मन में चिन्तन आया सज्जनदेवी को संभालना जरूरी है। उसके लिए सन्देश दिया जाए और समणी नियोजिका उसे वहां पहुंचाए। सन्देश लेकर चार समणियां गंगाशहर गईं। चौपड़ा परिवार ने और सज्जनदेवी ने सन्देश को पढ़ा, शक्ति का अनुभव किया और अपने आपको संभालने का प्रयत्न किया। यह इनका सही चिन्तन और सही मूल्यांकन है। उस दिन हमने सलक्ष्य प्रवचन के समय आध्यात्मिक संगीत और आगम-पाठ का समुच्चारण किया। संघ-भक्त परिवार में शक्ति-संप्रेषण करना हमारा दायित्व था। सचमुच यह अपने ढंग का पहला ही अवसर था आध्यात्मिक उपक्रम का, और वह भी एक श्रावक की स्मृति में। उस कार्यक्रम में जैनविश्वभारती के सभी कर्मचारी उपस्थित थे।'

परिवार के बारे में बोलते हुए मैंने कहा 'गंगाशहर का चौपड़ा परिवार ऐसा पुण्यवान परिवार है, जिसका पूरी रियासत में सम्मान है। ईशरचन्दजी चौपड़ा प्रभावशाली और समय के पाबन्द व्यक्ति थे। बड़े-से-बड़े व्यक्ति आ जाएं, पर वे अपनी चर्या में नियमित रहते थे। वे पकड़ के पक्के और गुरुदृष्टि के आराधक थे। श्रावक धर्मचन्द चोपड़ा ने अपने कर्तृत्व से ईशरचन्द बनने का प्रयत्न किया और सेठ भैंरूदान-ईशरचन्द चौपड़ा का नाम ज्यों का त्यों रोशन रखा। आज मैं धर्मचन्द चौपड़ा को एक साथ दो सम्बोधन देना चाहता हूं

- **तेरापंथ रत्न धर्मचन्द चौपड़ा**
- **प्रशासन पुरुष धर्मचन्द चौपड़ा**

श्रीमती सज्जनदेवी वीर पत्नी है, वीर मां और वीर पुत्री है। चौपड़ा परिवार जैसा श्रद्धालु और समर्पित है, वैसे ही इसका पितृपक्ष सेठिया परिवार भी कम नहीं है। यह स्वर्गीय बैरिस्टर श्रावक डालमचन्दजी सेठिया की पुत्री है। धर्मचन्द का पुत्र अजय अवस्था से छोटा है। यह भी विरल योग्यता-सम्पन्न युवक है। सज्जनदेवी और अजय से मैं कहना चाहता हूं कि समय बड़ी कसौटी का है। धैर्य और मनोबल को बनाए रखना है। एक क्षण के लिए भी कायर नहीं बनना है। धर्मचन्द चला गया, किन्तु तुम दोनों पर जिम्मेदारी है। उसके सपनों को, कल्पना को आकार देना है।'

उस अवसर पर मैंने धर्मचन्द को सामने रखकर कुछ पद्य भी कहे, जो इस प्रकार हैं

- **धर्म धीरो धर्म हीरो, धर्म धी रो पुंज हो।**
धर्मजी रो के कहूं मैं, धर्म नीति-निकुंज हो ॥
- **धर्मजी धर्मजी सदा कहते सभी, धर्मजी अमर अमरत्व पा के।**
धार्मिकों धार्मिकों के हृदय जा बसे, धर्मजी धाक अपनी जमा के ॥
- **घर हो तो धर्म-सज्जन का,**
स्वर हो तो धर्म-सज्जन का।
धर्म सज्जन का समन्वय अजय होता है,
अजय! सद्ज्ञान धर्म का पथ अभय होता है।
- **दृष्टि की आराधना में धर्मजी बस एक थे,**
स्वीकृत की साधना में धर्मजी बस एक थे।
विरल विमल विवेक थे निर्णय नियामक नेक थे,
शिथिलता स्वच्छन्दता अविवेकता पर ब्रेक थे ॥
- **अणुव्रत का नाम आते ही धर्म याद आएगा,**
उसका सम्पादकीय पढ़नेवाला क्या कभी धर्म को भूल पाएगा।

हर काम में नया आयाम, हर चिन्तन में नया व्यायाम,
प्रशासन संस्था-संचालन का व नेतृत्व का अभिनव निर्याम ॥
कोई भी प्रसंग हो, धर्मजी का व्यवस्था कौशल व्यवस्था का पाठ पढ़ाएगा ॥

मध्याह्न में फिर गंगाशहर-बीकानेर के लोगों को सवलिय सन्देश दिया। मंगलपाठ सुनाया। जामेव दिसि आगए तामेव दिसि पडिगए। चौपड़ा परिवार गोष्ठी, सज्जनदेवी को उपासना और कार्यकर्ता गोष्ठी का क्रम सम्पन्न। भविष्य में खेमचन्दजी सेठिया और टोडर ललवानी के संयुक्त संयोजन में काम चले, यह निर्णय हुआ। सबको आश्वासन मिला। ॐ भिक्षु, ॐ भिक्षु, गुरुदेवः शरणम्।

६ मार्च, गुरुवार। अणुव्रत आन्दोलन एक असाम्प्रदायिक आन्दोलन है। पिछले पांच दशकों से हम अणुव्रत का काम कर रहे हैं। राष्ट्रीय चरित्र को समुन्नत बनानेवाले इस आन्दोलन का आधार व्यक्ति-व्यक्ति की आस्था और आचरण है। अणुव्रत कार्यक्रम को अधिक गतिशील बनाने के लिए आवश्यक है कि युगीन सन्दर्भों में उसके दर्शन, सिद्धान्त और आचार-संहिता को समुचित प्रस्तुति दी जाए। प्रस्तुति कैसे दी जानी चाहिए, यह बोध देने के लिए अणुव्रत प्रशिक्षण का उपक्रम प्रारंभ किया गया। प्रस्तुत उपक्रम हमने साध्वीप्रमखा के छब्बीसवें मनोनयन दिवस पर शुरू किया। अब तक इसके दो सत्र सम्पन्न हो चुके हैं। तीसरा सत्र चल रहा है।

प्रत्येक सत्र दस दिनों का होता है। प्रथम सत्र में साधुओं को अणुव्रत के दर्शन या सैद्धान्तिक प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया गया। दूसरे सत्र में मान्य विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, प्रवक्ता और अधिकारी प्रशिक्षणार्थी की भूमिका में रहे। ये दोनों सत्र पूर्व रात्रि और पश्चिम रात्रि में समायोजित हुए। इनमें साध्वियों और समणियों की संभागिता नहीं रह सकी। इसलिए ३ मार्च से दिन में एक सत्र प्रारंभ किया गया। इसमें मुख्य रूप से साध्वियां, समणियां और मुमुक्षु बहनें भाग ले रही हैं। मर्यादा महोत्सव की सम्पन्नता के बाद लाडनूं पहुंचनेवाले साधु-साध्वियों को भी सहज रूप में प्रशिक्षण का लाभ मिल रहा है।

दस दिवसीय प्रशिक्षण में अणुव्रत आन्दोलन के इतिहास की विस्तार से जानकारी दी जाती है। अणुव्रत दर्शन की सम्यक् अवधारणा कराई जाती है। अणुव्रत के आन्दोलनात्मक पक्ष को सुव्यवस्थित और सुनियोजित रूप में आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी जाती है। शिविर में प्राध्यापकों, प्रवक्ताओं और जैविभा के अधिकारियों ने भी अच्छा रस लिया। अणुव्रत-प्रशिक्षण के इस उपक्रम में मुनि महेन्द्रजी अच्छा पाठ पढ़ाते हैं, पूरा श्रम करते हैं। प्रश्नोत्तर भी चलते रहते हैं।

७ मार्च, शुक्रवार। पिछले दिनों राजस्थान विधानसभा में अनुशासनहीनता और असंयत आचरण की जो घटनाएं घटित हुईं, वे देश और कानून बनानेवाली संस्थाओं की छवि को धुंधली बनानेवाली थीं। उस प्रसंग में मैंने एक विशेष सन्देश दिया। उस सन्देश में यह समझाया गया था कि मूल्यहीन शिक्षा, राजनीतिक असहिष्णुता, धार्मिक असहिष्णुता, बढ़ती हुई हिंसा और आर्थिक घोटालों के कुहासे को दूर करने के लिए अणुव्रत एक आलोकदीप का काम कर सकता है। जन-जन के मन में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था जगाने के साथ युग का तकाजा यह भी है कि अहिंसात्मक प्रतिकार का वातावरण भी बनाया जाए।

मेरे सन्देश ने अणुव्रत कार्यकर्ताओं को जगा दिया। उन्होंने दिनांक ५, ६ मार्च को अणुव्रत मंच से अहिंसात्मक प्रतिकार का प्रयोग किया। जयपुर की बड़ी चौपड़ पर अणुव्रती मोहनजी जैन और निर्मलकुमार सुराणा के नेतृत्व में उपवास व धरना दिया गया। इसमें जयपुर तथा बाहर के कार्यकर्ताओं की भी संभागिता रही। देश में गिरते नैतिक मूल्यों के विरोध में शान्तिपूर्ण तरीके से किया गया यह उपक्रम प्रभावी रहा। कार्यकर्ताओं ने मेरे सन्देश की प्रतियां तथा अणुव्रत आन्दोलन की जानकारी देनेवाले पैम्फलेट वितरित कर अपनी भावना से जन-जन को परिचित करने का प्रयास किया। जयपुर में इसकी अच्छी प्रतिक्रिया रही। संचार माध्यमों एवं मीडिया ने भी इसे काफी महत्त्व दिया।

जयपुर में व्यवस्थित रूप में चले कार्यक्रम की जानकारी मिलने पर कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ाते हुए मैंने कहा 'अणुव्रत मंच ने प्रतिरोधात्मक अहिंसक आन्दोलन का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसे उपक्रमों से अहिंसा की तेजस्विता प्रकट होती है और उसका व्यावहारिक स्वरूप जनता के सामने आता है। अणुव्रत मंच को चाहिए कि वह ऐसे प्रायोगिक कार्यक्रम समय-समय पर जारी रखे। इसके लिए अपेक्षा है विशेष जागरूकता की, जिससे अभिप्रेरित होकर अणुव्रत कार्यकर्ता ऐसे मौकों पर उत्साह के साथ काम कर सकें।'

जैनविश्वभारती में हमारे प्रवास के दौरान गत वर्ष लाडनूं के निकटवर्ती गांव कासण में अणुव्रत का सघन कार्य शुरू किया गया। स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यसनमुक्ति, भाईचारा और श्रम-स्वावलम्बन इस पंचसूत्री कार्यक्रम को लेकर अणुव्रत समिति, लाडनूं ने काम किया, जिसका परिणाम सन्तोषजनक रहा। क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के सहयोग से सरकार

ने भी वहां पर विकास के कुछ कार्य किए। इससे स्थानीय लोगों में नया उत्साह जागा और कार्य-विस्तार की मांग सामने आई।

कार्य की संभावना को देखते हुए इस वर्ष अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं ने गनोड़ा, विश्वनाथपुरा, बाढा, मारोरिया, हीरावती और मालासी को भी अणुव्रत गांव बनाने का संकल्प किया। समय-समय पर कार्यकर्ताओं ने वहां पहुंचकर एक उद्देश्य से साथ काम शुरू कर दिया कभी-कभी गांवों के लोग भी हमारे पास आकर प्रेरणा प्राप्त करते रहे। इस बार मर्यादा महोत्सव के बाद मुनि सुखलाल आदि साधुओं ने उन सातों गांवों की यात्रा की। अणुव्रत समिति के कोषाध्यक्ष विजयसिंह बरमेचा, डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, ओमप्रकाश सोनी आदि कार्यकर्ता भी इस यात्रा में साथ रहे। जानकारी मिली है कि सातों गांवों में शराब के ठेके समाप्त कर दिए गए तथा अनेक लोक कल्याणकारी कार्य प्रारंभ हो गए।

६ मार्च को सातों गांवों के जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं ने लाडनूं में दर्शन किए। उन्हें प्रेरणा दी गई कि वे इन गांवों को अणुव्रत ग्राम बनाने की दिशा में एकनिष्ठ होकर काम करते रहें। आगन्तुक व्यक्तियों ने उत्साह के साथ काम करने का संकल्प व्यक्त किया।

इन दिनों मेरे स्वास्थ्य की अन्तरंग स्थिति अच्छी नहीं चल रही है। अब परिवर्तन लाना ही होगा, मनोबल जुटाना ही होगा। मर्यादा महोत्सव और हेम दीक्षा द्विशताब्दी के बाद चाड़वास-बीदासर से साधु-साध्वियों के सिंघाड़ों का आगमन जारी है। साधुओं के कुछ सिंघाड़ों ने आज विहार किया। उनके साथ अच्छी चर्चा रही। उन्हें जो कुछ कहना था, स्पष्ट कह दिया। एक सिंघाड़ा और आया है। उसकी समस्या जटिल है। देखते हैं, कैसी चर्चा चलती है। समस्या का समाधान तो करना ही होगा।

८ मार्च, रविवार। बीदासर से डालचन्द बैंगानी आया। एक पोटली लाया। उसमें अनेक चीजें थीं। एक अर्थ का आलेख भी था। उसको श्रीडूंगरगढ़ पहुंचाया। कठोर कार्यवाही करने का निर्देश दिया।

१० मार्च, सोमवार। आज पारमार्थिक शिक्षण संस्था का उनपचासवां स्थापना दिवस मनाया गया। फाल्गुन शुक्ला द्वितीया का दिन, जिसे लोकभाषा में 'फूलड़िया दूज' कहा जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ में यह एक ऐतिहासिक दिन है। परम पूज्य गुरुदेव अष्टमाचार्य कालूगणी का जन्म आज के दिन हुआ था। अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात तथा आदर्श साहित्य संघ की विधिवत स्थापना भी आज के दिन हुई थी। मुमुक्षु बहनों के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। संस्था के संयोजक सोहनराजजी बोहरा ने पा.शि. संस्था का परिचय प्रस्तुत किया और बताया कि इस संस्था में अध्ययन और साधना कर अब तक पांच सौ बीस (५२०) सदस्य दीक्षित हो चुके हैं। इनमें एक सौ सोलह (११६) भाई और चार सौ चार (४०४) बहनें संघ में प्रवेश पा चुके हैं। स्थापना दिवस के सन्दर्भ में मुमुक्षु बहनों तथा समाज के कई प्रमुख व्यक्तियों ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी।

अपने वक्तव्य में मैंने कहा 'अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी को हम कभी विस्मृत नहीं कर सकते। आज हमारे संघ में विभिन्न दिशाओं में जो विकास हुआ है, वह उन्हीं की देन है। उन्होंने विकास के जो बीज बोए थे, वे ही आज फलवान बने हैं। अणुव्रत आन्दोलन, आदर्श साहित्य संघ और पारमार्थिक शिक्षण संस्था की भी संघ के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है

- अणुव्रत आन्दोलन ने तेरापंथ पर जितना उपकार किया है, संभवतः किसी ने नहीं किया। आज अणुव्रत जैनधर्म की पहचान बन गया है।
- एक समय था, जब तेरापंथ समाज में कोई साहित्य संस्थान नहीं था। उसका अभाव खटक रहा था। आदर्श साहित्य संघ की स्थापना में हमारे प्रभावशाली श्रावक हनूतमलजी सुराणा, जयचन्दलालजी दफ्तरी, सुगनचन्दजी आंचलिया, देवेन्द्र कर्णावट, शुभकरण दसानी आदि का अनन्य योग रहा है।
- पारमार्थिक शिक्षण संस्था हमारे समाज की ऐसी संस्था है, जिस पर सबकी कृपा है। यह एक अद्भुत संस्था है। इसका प्रारंभ भी झटपट नहीं हुआ। लोगों की मानसिकता बनाने में बहुत श्रम और समय लगा। समय-समय पर इसे अधिकारी भी अच्छे मिलते रहे। इस संस्था के प्रेरणा-स्रोत भी पूज्य कालूगणी ही हैं। उन्होंने ही साध्वियों की शिक्षा-व्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित करने का निर्देश दिया था। संस्था में तैयार हुए व्यक्तित्वों को देखना है तो महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा को देखो। भविष्य में इसका स्वरूप निरन्तर निखार पाता रहे, इस दृष्टि से सब जागरूक रहें, यह अपेक्षा है।"

•

www.terapanthinfo.com

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में

प्रत्येक क्रिया में साधना रहे

२४ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधक परम सुखों की प्राप्ति के लिए मन, वचन और काय की प्रवृत्ति का संयम करे। वह हर क्रिया के साथ साधना को जोड़ सकता है, किन्तु उसके लिए संयम की अपेक्षा होती है। यह ऐसी साधना है, जिसके लिए अतिरिक्त समय लगाने की अपेक्षा नहीं होती। व्यक्ति अनावश्यक चिंतन, वाणी का प्रयोग और शारीरिक चेष्टा न करे। जिस समय जो प्रवृत्ति हो, ध्यान उसी में केन्द्रित रहे तो भावक्रिया का प्रयोग हो सकता है। मन, वचन और काय पर नियंत्रण के द्वारा हम भीतर में प्रवेश कर सकेंगे और आन्तरिक सुखों का भी अनुभव कर सकेंगे।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ।

अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति का मार्ग

२५ अगस्त। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्रत्येक आत्मा में परम आनंद अवस्थित है। किन्तु उसकी अनुभूति साधना के द्वारा ही की जा सकती है। वह आन्तरिक आनंद अनिर्वचनीय होता है। शब्दों के द्वारा उसे पूर्णरूपेण अभिव्यक्त कर पाना असंभव है। व्यक्ति उसकी अनुभूति के लिए सतत साधनारत रहे, कषायमुक्ति की दिशा में प्रस्थान करे और समत्वभाव को परिपुष्ट बनाए।

पर्युषण पर्वाराधना की प्रेरणा प्रदान करते हुए परमपूज्य आचार्यवर ने कहा--'कल से पर्युषण पर्व प्रारंभ हो रहा है। यह पर्व समता की साधना का पर्व है। इस दौरान मुख्यतया धर्माराधना ही की जानी चाहिए। भौतिक संसाधनों से दूर रहकर विशेष रूप से संयम का अभ्यास करें। सचित्त, जमीकन्द और रात्रि भोजन के परिहार का अभ्यास करें तथा अधिकाधिक समय आत्मदर्शन की साधना में नियोजित करें।' कार्यक्रम में मंत्रीमुनिश्री का भी प्रेरणाप्रद अभिभाषण हुआ।

पर्युषण महापर्व के नवाह्निक कार्यक्रम का शुभारंभ

२६ अगस्त। भाद्रव शुक्ला द्वादशी। अध्यात्म के शिखर पर्व पर्युषण का शुभारंभ। प्रथम दिवस का खाद्य संयम दिवस के रूप में आयोजन। कार्यक्रम का प्रारंभ मुमुक्षु बहनों द्वारा प्रस्तुत मंगल संगान से हुआ। मुनि अनंतकुमारजी ने खाद्य संयम के महत्त्व को प्रतिपादित किया। मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने विशाल जैनागम भगवती के वैशिष्ट्य को व्याख्यायित किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'जैन परंपरा में पर्युषण एक महान पर्व है। यह सभी पर्वों का राजा है। इसका महत्त्व वक्तव्य से नहीं, जीवनशैली से उजागर होता है। यह जीवन व्यवहार के रूपान्तरण और धर्म के द्वार में प्रवेश करने का पर्व है। इस अलौकिक अर्थात लोकोत्तर पर्व की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से मूल्यवत्ता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संपूर्ण वर्ष में चातुर्मास का समय धर्माराधना की दृष्टि से श्रेष्ठ होता है। उसमें भी श्रावण और भाद्रपद मास कुछ विशेष होते हैं। इन दोनों में भी भाद्रपद मास कुछ विशेष महत्ता लिए हुए है। इस मास में पर्युषण अति महत्त्वपूर्ण होता है और संवत्सरी इसका शिखर दिवस है। इन दिनों में श्रावक समाज भी स्वयं को विशेष रूप से धर्माराधना में नियोजित करता है। धर्माराधना से आत्मशुद्धि तो होती ही है, शारीरिक स्वास्थ्य की प्राप्ति भी इससे हो सकती है।' पूज्य आचार्यवर ने जनसमूह को खाद्य संयम की विशेष प्रेरणा प्रदान की।

श्रीमज्जयाचार्य के महाप्रयाण दिवस का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'भाद्रपद मास तेरापंथ की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। अनेक आचार्यों का इतिहास इस मास से संबद्ध है। परम पूज्य श्रीमज्जयाचार्य का आज महाप्रयाण दिवस है। वे अध्यात्मवेत्ता, तत्त्ववेत्ता, आगमवेत्ता, विधिवेत्ता और अनुशासनवेत्ता आचार्य थे। उन्होंने अपने जीवन में अध्यात्म की विशिष्ट साधना की। तत्त्वज्ञान के तो मानों वे सागर थे। अपने आगम ज्ञान के आधार पर उन्होंने विपुल साहित्य का सृजन किया। संघ की व्यवस्थाओं को उनसे नया आयाम मिला। महामना आचार्य भिक्षु के बाद

www.terapanthinfo.com

संघ को सजाने-संवारने का श्रेय उन्हीं को है। ऐसे महान आचार्य को पाकर तेरापंथ शासन धन्य हो गया। मैं उन्हें अत्यन्त श्रद्धा के साथ नमन करता हूं।'

आचार्यवर ने भगवान महावीर पर आधारित व्याख्यानमाला का प्रारंभ करते हुए सम्यक्त्व के महत्त्व को प्रतिपादित किया। आज पूज्यप्रवर के मस्तक और मुखारबिन्द का केशलुंचन हुआ। साधु-साध्वियों द्वारा निर्जरा में सहभागी बनने के अनुरोध पर उन्हें एक-एक घंटा आगम स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की। इसी प्रकार श्रावक समाज को सात-सात सामायिक करने की प्रेरणा भी पूज्यवर ने प्रदान की।

स्वाध्याय से मिलता है आलोक

२७ अगस्त। महापर्व पर्युषण के दूसरे दिन का कार्यक्रम 'स्वाध्याय दिवस' के रूप में आयोजित हुआ। साध्वी मुकुलयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। मुनि पुलकितकुमारजी(मुनि प्रशमकुमारजी) एवं मुनि प्रसन्नकुमारजी ने स्वाध्याय के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री ने भगवती पर आधारित अपने वक्तव्य में मंगलाचरण के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए द्रव्य मंगल और भाव मंगल की चर्चा की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में भगवान महावीर के पूर्व भवों की यात्रा में नयसार के भव का वर्णन करते हुए कहा--'हर मुमुक्षु को नवतत्त्वों की जानकारी हो। उसके अभाव में मुमुक्षा भाव पुष्ट नहीं होता। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र--ये तीन बड़े रत्न हैं। संसार में अन्यान्य पदार्थों को रत्न माना गया है, किन्तु इन तीनों के सामने सभी रत्न तुच्छ हैं। इनके बिना कर्मों से मुक्ति कदापि नहीं हो सकती।'

स्वाध्याय के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'तपस्या के बारह प्रकारों में दसवां है--स्वाध्याय। प्राचीन साहित्य में तो यहां तक कह दिया गया कि स्वाध्याय के समान कोई दूसरा तप नहीं है। स्वाध्याय से ज्ञान का आलोक प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्त होने पर व्यक्ति साधना में और ज्यादा गति कर सकता है। कंठस्थ ज्ञान का भी अपना महत्त्व होता है। साधु-साध्वियों में ज्ञान को कंठस्थ करने की परंपरा बनी रहे। आगम ज्ञान का भंडार हैं। उनके स्वाध्याय से संयम पर्यव निर्मल बन सकते हैं। जीवन में कम से कम एक बार तो आगम बत्तीसी का स्वाध्याय हो ही जाना चाहिए।'

सामायिक है समता के अभ्यास की साधना

२८ अगस्त। पर्युषण महापर्व का तीसरा दिन। सामायिक दिवस का आयोजन। मुनि विजयकुमारजी द्वारा प्रस्तुत गीत के बाद साध्वी विमलप्रज्ञाजी ने सामायिक की महत्ता को विश्लेषित किया।

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी ने भगवती सूत्र के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा--'वर्तमान में उपलब्ध आगमों में भगवती सूत्र सबसे बड़ा है। इसका प्रणयन प्रश्नोत्तर शैली में हुआ है। इसमें तत्त्व, इतिहास, भूगोल, खगोल आदि विविध विषयों का सम्यक् विवेचन किया गया है।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सामायिक आत्मा के आसपास रहने का एक आचरणात्मक अनुष्ठान है। सामायिक में दो करण तीन योग से सावद्य योग की विरति होती है। गुरुदेव तुलसी आठ कोटि की सामायिक करवाया करते थे। आठ कोटि त्याग के साथ वचन व काय के अनुमोदन का भी परित्याग हो जाता है। नौ कोटि सामायिक भी की जा सकती है।

भगवान महावीर के पूर्व भवों के क्रम में राजकुमार मरीचि के जीवन-प्रसंगों की रोचक प्रस्तुति के साथ आचार्यवर ने साधु-साध्वियों को आगम बत्तीसी के स्वाध्याय की प्रेरणा भी प्रदान की। आज भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी होने से आचार्यवर ने हाजरी का वाचन करते हुए इसकी कई धाराओं का विश्लेषण किया। श्रावक निष्ठापत्र की अवगति देते हुए आचार्यवर ने उसका श्रावक समाज से उच्चारण करवाया।

२९ अगस्त। पर्युषण महापर्व का चौथा दिन। वाणी संयम दिवस का आयोजन। साध्वी चारित्रयशाजी ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि मननकुमारजी ने विषय की प्रस्तुति दी। मुनि अनुशासनकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, मुनि हितेन्द्रकुमारजी ने समूह गीत प्रस्तुत किया। मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। उनकी संसारपक्षीया मातुश्री गवरादेवी छाजेड़ ने अपने संसारपक्षीय सुपुत्र की तपस्या के संदर्भ में मंगलभावना व्यक्त की। मंत्री मुनिश्री का भगवती सूत्र पर आधारित अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में वाणी संयम की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा--'प्रत्येक व्यक्ति में वाणी का संयम आवश्यक है। वाणी का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों हो सकता है। व्यक्ति वाणी का

विवेक रखे, बिना मतलब न बोले, कटुवचन न बोले। मौन बहुत अच्छा है। मेरी दृष्टि में अनावश्यक न बोलना बड़ा मौन है। वाणी संयम से व्यक्ति अनेक प्रकार के नुकसान से बच सकता है। अध्यात्म व व्यवहार दोनों दृष्टियों से वाणी संयम महत्त्वपूर्ण है।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने सेवाभाव की चर्चा करते हुए कहा--'मुनि सोहनलालजी स्वामी (चाड़वास) से मैंने तत्त्वज्ञान सीखा, दान-दया का सिद्धान्त समझा। मैं उनके सामीप्य में रहा। कला की दृष्टि से हमारे धर्मसंघ के प्रथम कोटि के कलाकार मुनियों में उनका नाम रखा जा सकता है। वे सौम्य, मृदु एवं आचारकुशल मुनि थे। मुनि रोशनलालजी स्वामी उनसे जुड़े और उनकी सेवा की। मुनि जसकरणजी स्वामी के साथ मुनि मिलापचन्दजी स्वामी व मुनि पृथ्वीराजजी स्वामी लम्बे समय तक रहे। मुनि पृथ्वीराजजी स्वामी ने दोनों मुनियों की लंबे समय तक खूब सेवा की। मुनि दुलीचन्दजी स्वामी 'दिनकर' की मुनिश्री पानमलजी स्वामी ने सेवा की। दोनों के बीच तादात्म्य भाव था। मुनि डूंगरमलजी स्वामी के साथ मुनि चम्पालालजी स्वामी व मुनि शोभालालजी स्वामी रहे। इसी तरह साध्वियों में भी सेवा मुखर रही है।'

भगवान महावीर के पूर्व भवों में साधक मरीचि के अवशिष्ट जीवन से लेकर सत्रहवें भव तक का विशद विवेचन करते हुए पूज्य आचार्यवर ने अहंकार मुक्ति की साधना को पुष्ट करने का आह्वान किया। प्रवचन के पश्चात श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में स्थिरवासिनी साध्वी लिछमाजी (राजलदेसर) के देवलोकगमन होने पर उनकी स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

बारह व्रत में समाविष्ट है अणुव्रत

३० अगस्त। पर्युषण महापर्व का पांचवां दिन। अणुव्रत चेतना दिवस का आयोजन। मुनि नयकुमारजी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वी शुभप्रभाजी, अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी ने विषय को प्रस्तुति दी। मंत्री मुनिश्री ने अणुव्रत की उपयोगिता व व्यापकता की चर्चा करते हुए मानव जीवन पर पड़ने वाले इसके प्रभावों पर प्रकाश डाला।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अणुव्रत बारह व्रतों का एक अंग है। पिछले कुछ वर्षों से बारह व्रत धारण करने की एक लहर-सी चली है। बारह व्रत बहुत लाभदायी हैं। इससे सामाजिक व्यवस्था भी स्वस्थ बनती है। बारह व्रत को स्वीकार करना अणुव्रत को स्वीकार करना है।'

अणुव्रत आन्दोलन की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया और उसे व्यापक बनाया। आचार्य भिक्षु ने मिथ्यात्वी की सत्क्रिया को देशाराधकत्व की कोटि में माना। इस सिद्धान्त के आधार पर आचार्य तुलसी ने केवल तेरापंथी जैन के लिए ही नहीं, संपूर्ण मानव जाति के लिए अणुव्रत को स्वीकार्य बना दिया। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तन के बाद उन्होंने भारत के विभिन्न प्रान्तों की पदयात्रा की। तेरापंथ की व्यापकता में अणुव्रत वरदान सिद्ध हुआ है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'अणुव्रत प्रभारी के रूप में मुनिश्री सुखलालजी स्वामी अणुव्रत के कार्य को पूरी निष्ठा व गहराई से संपादित करते हैं। एक तरह से ये अणुव्रत के पीछे पड़े हुए हैं। अणुव्रत के संदर्भ में चिंतन-मनन करते रहते हैं। वस्तुतः ऐसे धुनी मुनियों की जरूरत है। हमने युवा मुनि अक्षयप्रकाशजी को अणुव्रत का सहप्रभारी बनाया है। ये भी लगनशील व प्रबुद्ध हैं।' नशामुक्त केलवा अभियान की बात को आगे बढ़ाते हुए आचार्यवर ने कार्तिक मास में इसकी समग्र रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आह्वान किया।

भगवान महावीर के त्रिपृष्ठ वासुदेव भव की रोचक विवेचना करते हुए आचार्यवर ने राजा के कर्तव्यों की तथा माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति दायित्व की विशद मीमांसा की। आज प्रातः नगर के विभिन्न मार्गों से अणुव्रत चेतना रैली निकाली गई।

पर्युषण यात्रा विवरण २०११

समण-समणीवृन्द (विदेश प्रवास)

१. समण सिद्धप्रज्ञजी, उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा (भीनासर)	सेक्रामेंटो (अमेरिका)
२. समणी मधुरप्रज्ञा, रोहितप्रज्ञा	दुबई
३. समणी कुसुमप्रज्ञा, चैत्यप्रज्ञा	सिंगापुर
४. समणी ऋजुप्रज्ञा, विनयप्रज्ञा	केलिफोर्निया (अमेरिका)

भारत में

१. समणी परमप्रज्ञा, प्रेक्षाप्रज्ञा	काठमांडु	१०. समणी जगतप्रज्ञा, समताप्रज्ञा	नवी मुम्बई.वाशी
२. समणी चिन्मयप्रज्ञा,स्वर्णप्रज्ञा, सुलभप्रज्ञा	इचलकरंजी	११. समणी संचितप्रज्ञा, भव्यप्रज्ञा	विजयनगरम
३. समणी मंजुप्रज्ञा, गौरवप्रज्ञा, प्रशान्तप्रज्ञा	बाडमेर	१२. समणी अमितप्रज्ञा, रत्नप्रज्ञा	केसूर
४. समणी निर्मलप्रज्ञा, हंसप्रज्ञा	अजमेर	१३. समणी मानसप्रज्ञा, समीक्षाप्रज्ञा	सेलम
५. समणी शुभप्रज्ञा, मननप्रज्ञा, अमलप्रज्ञा	उज्जैन	१४. समणी संबोधप्रज्ञा, गुरुप्रज्ञा	जगदलपुर
६. समणी श्रद्धाप्रज्ञा, सौम्यप्रज्ञा	मनेन्द्रगढ़	१५. समणी शुक्लप्रज्ञा, प्रबोधप्रज्ञा	सिलीगुड़ी
७. समणी संघप्रज्ञा, अमृतप्रज्ञा	तेजपुर	१६. समणी श्रेयसप्रज्ञा, रुचिप्रज्ञा,पुनीतप्रज्ञा	सिलचर
८. समणी अचलप्रज्ञा, रश्मिप्रज्ञा	चिकमगलूर	१७. समणी मध्यस्थप्रज्ञा, अर्हतप्रज्ञा	डोंबीवली
९. समणी कमलप्रज्ञा, मुकुलप्रज्ञा	पंचकुला	१८. समणी रोहिणीप्रज्ञा, पूर्णप्रज्ञा	बाव
		१९. समणी रमणीयप्रज्ञा, प्रणवप्रज्ञा	पूना

मुमुक्षु वर्ग

१. मुमुक्षु वीणा, मुमुक्षु गुणश्री, मुमुक्षु प्रेरणा, मुमुक्षु ललिता	कोयम्बतूर (तमिलनाडु)
२. मुमुक्षु ज्योति, मुमुक्षु हेमलता, मुमुक्षु रीना, मुमुक्षु भावना	मैसूर (कर्नाटक)
३. मुमुक्षु प्रीति, मुमुक्षु ख्याति, मुमुक्षु मधु, मुमुक्षु भाग्यश्री	औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
४. मुमुक्षु परिमल, मुमुक्षु प्रकाश, मुमुक्षु खुशबू, मुमुक्षु पूजा	फरीदाबाद (हरियाणा)
५. मुमुक्षु मर्यादा, मुमुक्षु ललिता, मुमुक्षु बिन्दु, मुमुक्षु रेखा	कालांवाली (हरियाणा)
६. मुमुक्षु भावना, मुमुक्षु पूजा, मुमुक्षु रोशनी, मुमुक्षु कविता	विजयवाड़ा (आन्ध्र प्रदेश)
७. मुमुक्षु प्रेक्षा, मुमुक्षु ममता, मुमुक्षु ज्योति, मुमुक्षु जयश्री	विशाखापत्तनम (आन्ध्र प्रदेश)

उपासक

१. श्री मगनलाल जैन (तुसरा) श्री प्रवीण सुराना (कोलकाता)	रायबरेली	१२. श्री इन्द्रचन्द नाहटा (कोकराझार) श्री महेन्द्र दूगड़ (कोलकाता)	रायगंज
२. श्री मनीष जैन (पंचकुला) श्री लादूलाल नंगावत (उधना)	वणी	१३. श्री मालचन्द भंसाली (कोलकाता) श्री नरेन्द्र मणोत (कोलकाता)	ढेकियाजुली
३. श्री सुशील बाफना (जलगांव) श्री नौरतन बेंगानी (निरमली)	राजमुंद्री	१४. श्री महेन्द्र कोचर (कोलकाता) श्री प्रदीप सिंघी (कोलकाता)	तिनसुकिया
४. श्री सोहनलाल कोठारी (मुम्बई) श्री मिश्रीमल चौधरी (मुम्बई)	जोरहाट	१५. श्री मोहनलाल संकलेचा (सूरत) श्री पारसमल दूगड़ (मुम्बई)	भिवंडी
५. श्री महालचन्द पींचा (अहमदाबाद) श्री चन्द्रप्रकाश मेहता (मुम्बई)	चिखली	१६. श्री मोहनलाल बोथरा (कोलकाता) श्री नरेश नाहटा (कोलकाता)	बरेली
६. श्री सोहनराज तातेड़ (जोधपुर) श्री कान्तिलाल काबड़िया (सूरत)	भयन्दर	१७. श्री रणजीत चोरड़िया (कोलकाता) श्री ताराचन्द बरमेचा (कोलकाता)	अलीपुरद्वार
७. श्री शंभुलाल जैन (केसिंगा) श्री कैलाशचन्द जैन (केसिंगा)	बरपेटारोड	१८. श्री रतनलाल हिरण (मुम्बई) श्री गंभीरमल डागलिया (मुम्बई)	दोंडाइचा
८. श्री शान्तिलाल बोहरा (कोयम्बतूर) श्री प्रभुभाई मेहता (भुज)	तिरुवन्नामलै	१९. श्री सम्पतराम सुराना (सरदारशहर) श्री शान्तिलाल कोठारी (मुम्बई)	पिपलनेर
९. श्री बजरंग जैन (बेंगलुरु) श्री नरेश चोपड़ा (सूरत)	बड़ोदरा	२०. श्री सुभाष समदरिया (बीड़) श्री गौतमचन्द गादिया (सूरत)	रायचूर
१०. श्री अशोकभाई संघवी (सूरत) श्री नरेन्द्र मेहता (भुज)	पालघर	२१. श्री सुरेश ओस्तवाल (मुम्बई) श्री मुकेश चोरड़िया (मुम्बई)	ग्वालियर
११. श्री इन्द्राजमल नाहटा (कोलकाता) श्री निर्मलकुमार सुराना (कोलकाता)	धुबड़ी	२२. श्री कन्हैयालाल बोथरा(कोकराझार) श्री खींवकरण बैद (कोलकाता)	विश्वनाथचारली

२३. श्री गौतम बैदमूथा (बालोतरा)
श्री मीठालाल संघवी (पालघर) — मण्डिया

२४. श्री डालचन्द कोठारी (मुम्बई)
श्री सुभाष चपलोत (मुम्बई) — महाड

२५. श्री दीपचन्द बोकाड़िया (हिरियुर)
श्री सूरजमल सूर्या (धुलिया) — मदुरई

२६. श्री पुखराज धोका (सूरत)
श्री मीठालाल भोगर (सूरत) — हिरियूर

२७. श्री अर्जुनलाल सोलंकी (मुम्बई)
श्री रोशनलाल चींपड़ (मुम्बई) — जबलपुर

२८. श्री सोहनलाल सिंघवी (मुम्बई)
श्री कन्हैयालाल कोठारी (मुम्बई) — अहमदगढ़

२९. श्री धनराज छाजेड़ (अहमदाबाद)
श्री खींवराज सालेचा (सूरत) — सिंधनूर

३०. श्री प्रकाश सुराना (कोलकाता)
श्री रवि छाजेड़ (कोलकाता) — कोकराझार

३१. श्री कमलचन्द बैद (धुबड़ी)
श्री राजेश चंडालिया (कोलकाता) — इस्लामपुर

३२. श्री घीसूलाल नाहर (जयपुर)
श्री मनसुख चपलोत (मुम्बई)
श्री धर्मचन्द चपलोत (मरोली) — भटिंडा

३३. श्री डालचन्द नौलखा (अहमदाबाद)
श्री पंकज दुधोड़िया (कोलकाता) — हुबली

३४. श्री महावीरप्रताप दूगड़(कोलकाता)
श्री सचिन कांसवा (रतलाम) — फारबिसगंज

३५. श्री संतोष रांका (पुतुर)
श्री पदमचन्द रांका (चेन्नई) — नंजनगुड

३६. श्री ताराचन्द भंडारी (जयपुर)
श्री मेवालाल लोढ़ा (पचपदरा) — बकानी

३७. श्री विनोद बोरदिया (डीसा)
श्री रतन मेहता (डीसा) — पाटण

३८. श्री रामेश्वरलाल जैन (भगवतगढ़)
श्री राजेन्द्र पुगलिया (श्रीडूंगरगढ़) — जाखल

३९. श्री कांतिलाल सिसोदिया (सूरत)
श्री शांतिलाल संचेती (पूना) — ठाणे

४०. श्री जवेरीलाल संकलेचा(अहमदाबाद)
श्री शंकरलाल पीतलिया (खेड़ब्रह्मा) — जावद

४१. श्री धर्मचन्द बाफना(अलीपुरद्वार)
श्री हेमराज बच्छावत (कोलकाता) — सिमलगुड़ी

४२. श्री मोहनलाल सामसुखा (कोलकाता)
श्री विनीत सिंघी (कोलकाता) — विष्णुपुर

४३. श्री ओमप्रकाश जैन(टिटिलागढ़)
श्री राजकुमार जैन (दिल्ली) — इरोड

४४. श्री सुरेश बाफना (सूरत)
श्री कांतिभाई मेहता (सूरत) — जमशेदपुर

४५. श्री सुरेन्द्र सेठिया (कोलकाता)
श्री विजयकुमार बरमेचा(कोलकाता) — अगरतल्ला

४६. श्री विजयराज सकलेचा(अहमदाबाद)
श्री रतन सियाल (मुम्बई) — विराटनगर

४७. श्री भंवरलाल चोपड़ा (इरोड)
श्री हनुमानमल दूगड़ (इरोड) — टिंडिवनम

४८. श्री महेन्द्र सिंघवी (मुम्बई)
श्री जितेन्द्र भामरा (मुम्बई) — चित्रदुर्ग

४९. श्री गणेश मेहता (नाथद्वारा)
श्री जोधराज काबड़िया (सूरत) — उचाना

५०. श्री ओमप्रकाश जैन (दिल्ली)
श्री महावीर ढेलड़िया (सूरत) — कोटकपूरा

५१. श्री गणपत मारू (मुम्बई)
श्री पारसमल संचेती (मुम्बई) — राउरकेला

५१. श्री राजेन्द्र सेठिया(गंगाशहर)
श्री अशोक परमार (सूरत) — अंकलेश्वर-भरूच

५३. श्री मोतीलाल जीरावला(गुड़गांव)
श्री रणजीत कोठारी (मुम्बई) — फतेहाबाद

५४. श्री सुरेन्द्र सालेचा (पाली)
श्री मिश्रीलाल नंगावत (उधना)
श्री महावीर संचेती (उधना) — डीसा

५५. श्री दिनेश राठौड़ (उधना)
श्री प्रकाश सिंघवी (सूरत) — मालेगांव

५६. श्री अर्जुन मेड़तवाल (उधना)
श्री बजरंग चुंडावत (देवपुरा) — बेलडांगा (प.बं.)

५७. श्री प्रवीण मेड़तवाल (उधना)
श्री कोमल डांगी (सूरत) — निरमली

५८. श्री शांतिलाल छाजेड़ (आमेट)
श्री फूलचन्द छत्रावत (सूरत) — नागपुर

५९. श्री गेहरीलाल बाफना (सूरत)
श्री उत्तमचन्द डागा (अहमदाबाद) — मनमाड

६०. श्री उत्तमचन्द बोहरा (आमेट)
श्री कमल सेठिया (कोलकाता)
श्री महेन्द्र बैद (कोलकाता) — डीमापुर

उपासिका

१. श्रीमती सूरजदेवी दूगड़ (सूरत)
श्रीमती पुष्पा गन्ना (बेंगलुरु) — सोलापुर

२. श्रीमती रजनी दूगड़ (अहमदाबाद)
श्रीमती हेमलता परमार (अहमदाबाद)
श्रीमती कमला सालेचा (अहमदाबाद) — उल्हासनगर

३. श्रीमती चन्द्रा बड़ाला (मुम्बई) — कुंभकोणम
श्रीमती भाग्यवती कच्छारा(मुम्बई)

४. श्रीमती निर्मला जैन (राजसमन्द)
श्रीमती आशा चोरड़िया(बारडोली) — भिलाई
श्रीमती पारसदेवी बड़ाला (दौलतगढ़)

५. श्रीमती चन्द्रकान्ता पुगलिया (कोल.) — जैपर(ओडिसा)
श्रीमती सरोज दूगड़ (कोलकाता)

६. श्रीमती राजकुमारी जैन (कोलकाता) — फालाकांटा
श्रीमती ललिता दूगड़ (कोलकाता)

७. श्रीमती शारदा पुगलिया (कोलकाता) — करीमगंज
श्रीमती कमला बांठिया (कोलकाता)

८. डा. सुशीला बाफना (लाडनूं)
श्रीमती किरण दुधोड़िया (अहमदाबाद) — नीमच
श्रीमती सरोज संचेती (अहमदाबाद)

९. श्रीमती तारा दूगड़ (कोलकाता) — डिंफू(नागालैंड)
श्रीमती चन्द्रकला कोचर (कोलकाता)

१०. श्रीमती राजेश्वरी तातेड़ (गुंटकल)
श्रीमती सरस्वती कोठारी (गदग) — मुंडरगी
श्रीमती देवी भंसाली (इचलकरंजी)

११. श्रीमती लक्ष्मी बरमेचा (कोलकाता) — नोगांव(असम)
श्रीमती सरिता सामसुखा (कोलकाता)

१२. श्रीमती लीलादेवी सालेचा (मुम्बई)
श्रीमती चन्द्रा सुराणा (हैदराबाद) — आरकोणम
श्रीमती मंजु दूगड़ (सिकन्द्राबाद)

१३. श्रीमती पुष्पा मेहता (मुम्बई)
श्रीमती शारदा मेहता (मुम्बई) — मरोली
श्रीमती कमला चोरड़िया (मुम्बई)

१४. श्रीमती मधुबाला जैन (भिवानी) — तपामंडी
श्रीमती सुरजीत सिंघला (पंचकुला)

१५. श्रीमती प्रभा सेठिया(फारबिसगंज) — बंगाईगांव (दक्षिण)
श्रीमती संगीता पटावरी (कटिहार)

१६. श्रीमती विनोदबाला डागा(अहमदाबाद)
श्रीमती चांद छाजेड़ (अहमदाबाद) — कामरेज
श्रीमती कुसुम गधैया (अहमदाबाद)

१७. श्रीमती प्रतिभा चोपड़ा (ठाणे)
श्रीमती कुसुम इन्टोदिया (मुम्बई) — कोप्पल
श्रीमती रत्ना बागरेचा (मुम्बई)

१८. श्रीमती आशावेन वकील (मुम्बई)
श्रीमती रूपा धोका (मुम्बई) — जयसिंहपुर
श्रीमती रत्ना बड़ाला (मुम्बई)

१९. श्रीमती शान्ता नौलखा(लावासरदारगढ़)
श्रीमती मंजुलता गेलड़ा (आमेट) — झकनावद
श्रीमती प्रेमदेवी सियाल (आमेट)

२०. श्रीमती कला बच्छावत (कोलकाता) — लंका (असम)
श्रीमती जतन बांठिया (कोलकाता)

२१. श्रीमती विजयलक्ष्मी मणोत(कोल.) — बंगाईगांव
श्रीमती सरोज भंसाली-II (कोलकाता)

२२. श्रीमती वीणा सामसुखा(कोलकाता) — किशनगंज
श्रीमती सरोज भंसाली-I(कोलकाता)

२३. श्रीमती किरण सुराणा(कोलकाता) — खारूपेटिया
श्रीमती विमला मणोत(कोलकाता)

२४. श्रीमती सरोजदेवी सुराणा(हैदराबाद)
श्रीमती सुमित्रा बरड़िया(बेंगलुरु) — गुडियात्तम
श्रीमती मंजु गन्ना (बेंगलुरु)

२५. श्रीमती सरला सुराना(कोलकाता) — शिलोंग
श्रीमती निर्मला दुधोड़िया (कोलकाता)

२६. श्रीमती सुनीला नाहर (मेहकर) — मानवी (कर्नाटक)
श्रीमती पुष्पा चोपड़ा (कोप्पल)

२७. श्रीमती विमला कोठारी (गदग) — दावणगेरे
श्रीमती सरोज नाहर (सिंधनूर)

२८. श्रीमती उमा सांखला (जलगांव)
श्रीमती नम्रता सेठिया (जलगांव) — जलगांव
श्रीमती आरती सांखला (भुसावल)

२९. श्रीमती पुखराज सेठिया(कोलकाता) — जयगांव
श्रीमती राजकुमारी सुराना(कोलकाता)

३०. श्रीमती मंजु दूगड़ (कोलकाता) — लामडिंग
श्रीमती इन्द्रा दूगड़ (कोलकाता)

३१. श्रीमती जयश्री बरमेचा (कोलकाता) — दीनहट्टा
श्रीमती सुखमाल श्यामसुखा (कोलकाता)

३२. श्रीमती मंजु पीपाड़ा (कल्याणपुरा)
श्रीमती शान्ता मेहता (सूरत) — बोरी
श्रीमती मीना मेहता (सूरत)

३३. श्रीमती सुशीला बड़ाला (मुम्बई)
श्रीमती उषा सिंघवी (मुम्बई) — कल्याणपुरा
कु. दीपिका जैन (कल्याणपुरा)

३४. श्रीमती मंजु सेठिया (सूरत) — सूरतगढ़
श्रीमती मधु झाबक (श्रीडूंगरगढ़)

३५. श्रीमती विमला डागलिया (मुम्बई)
श्रीमती मधु नाहटा (सूरत) — नवसारी
श्रीमती उर्मिला सुराना (बेंगलुरु)

साध्वी लिछमाजी (राजलदेसर) कालधर्म को संप्राप्त

विगत २७ अगस्त को श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में साध्वी लिछमाजी का स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'साध्वी लिछमाजी राजलदेसर के बैद परिवार से संबद्ध थीं। वि. सं. २००० में उन्हें परमपूज्य गुरुदेव तुलसी से दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे साध्वी आशाजी(राजलदेसर) और साध्वी मानकुमारीजी(सुजानगढ़) के साथ क्रमशः चालीस और सात वर्षों तक रहने के पश्चात पिछले लगभग बारह वर्षों से साध्वी कलाश्रीजी के साथ रह रही थीं। उन्होंने साध्वी किस्तूरांजी, साध्वी आशांजी, साध्वी मानकुमारीजी एवं साध्वी कलाश्रीजी के अस्वास्थ्य की स्थिति में निष्ठा के साथ सेवा की। वि.सं.२०६८, भाद्रपद कृष्णा द्वादशी के दिन श्रीडूंगरगढ़ में उनका स्वर्गवास हो गया। जिस प्रकार एक-एक ईंट से मकान का निर्माण होता है, उसी प्रकार एक-एक सदस्य से संघ का निर्माण होता है। इसलिए प्रत्येक सदस्य संघ के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। साध्वीजी संघ में आईं, शासन की सेवा की, शासन से सेवा ली और एक दिन प्रयाण कर गईं। उनकी आत्मा शीघ्र मोक्षश्री का वरण करे।'

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर साधु-साध्वियों द्वारा पंचरंगी तप

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में परम पावन आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में साधु-साध्वियों ने पंचरंगी तप संपन्न किया है। तप में सहभागी साधु-साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं--

पंचोला (पांच दिन का तप) : मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि विनीतकुमारजी, साध्वी अतुलयशाजी।

चोला (चार दिन का तप) : मुनि विश्रुतकुमारजी, मुनि भव्यकुमारजी, साध्वी जयविभाजी, साध्वी उदितयशाजी, साध्वी तन्मयप्रभाजी।

तेला (तीन दिन का तप) : मुनि अनुशासनकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, साध्वी शुभप्रभाजी (चोला), साध्वी वसुधाश्रीजी, साध्वी विशालयशाजी।

बेला (दो दिन का तप) : मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी (तेला), साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी मुकुलयशाजी।

उपवास : मुनि पानमलजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जयन्तकुमारजी, मुनि सुधांशुकुमारजी, मुनि हितेन्द्रकुमारजी, साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी सविताश्रीजी।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर विशाल रक्तदान शिविर

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में १२ अगस्त २०११ को श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन मुम्बई और अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा विशाल रक्तदान शिविर की समायोजना की गई। मुम्बई में एक ही दिन सोलह रेलवे स्टेशनों सहित कुल ६४ स्थानों पर समायोजित इस विशाल रक्तदान शिविर में ५७०० यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। रक्त की बहुलता के कारण अनेक स्थानों पर चिकित्सकों ने 'इतना ही पर्याप्त है' कह कर और अधिक रक्त लेने से इन्कार कर दिया। इस कारण अनेक लोग रक्तदान से वंचित रह गए। तेरापंथ समाज द्वारा इतने विराट स्तर पर आयोजित होने वाला यह प्रथम रक्तदान शिविर था, जिसमें फिल्म इंडस्ट्री के प्रख्यात अभिनेता राजेश खन्ना, फिल्म निर्माता अशोक पंडित, आत्माराम भिड़े, हास्य अभिनेता राजू श्रीवास्तव, पत्रकार श्री पोपटलाल, डा.हाथी, श्री रोशनसिंह सोढ़ी आदि शिविर में संभागी बने।

रक्तदान शिविर की सूचना हेतु लगे आचार्यवर के चित्रयुक्त होर्डिंग्स, समाचारपत्रों और न्यूज चैनलों द्वारा प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किए जाने वाले शिविर के समाचारों से पूरी मुम्बई में यह शिविर चर्चा का विषय बना रहा। शिविर की सफल आयोजना में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन मुम्बई के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नाहटा, महामंत्री श्री के. एल.परमार, कोषाध्यक्ष श्री माणक धींग, शिविर संयोजक श्री चिमन सिंघवी, अ. भा. तेयुप के महामंत्री श्री रमेश सुतरिया एवं मुम्बई के विभिन्न उपनगरों की ४४ तेरापंथ युवक परिषदों का निष्ठापूर्ण श्रम रहा। इनके अतिरिक्त स्थानीय सभा तथा महिला मंडल के साथ लायंस क्लब आदि का भी अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ।

रक्तदान शिविर के दिन तेरापंथ भवन कांदीवली में सुराणा हास्पिटल ऑफ ग्रुप के सहयोग से समायोजित निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में भी अनेक लोग लाभान्वित हुए। उल्लेखनीय है--श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

मुम्बई द्वारा आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष में तेरापंथ समाज के पचास व्यक्तियों की अपेक्षानुसार हृदय शल्य चिकित्सा निःशुल्क करवाने का संकल्प व्यक्त किया गया है। कोई भी तेरापंथी इस उदार सहयोग का लाभ प्राप्त कर सकता है। इस संदर्भ में समुचित जानकारी के लिए मोबाइल नं. ९८२०१२३५६०, ९८२०१८२१६६ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- चि. शंकर (सुपौत्र स्वर्गीया मांगीबाई मोतीलालजी, सुपुत्र श्रीमती मायादेवी-विजयकुमार मुणोत) सह सौ. प्रेक्षा (सुपौत्री श्रीमती चुकीबाई-धनराजजी, सुपुत्री श्रीमती कल्पना-अशोककुमार धारीवाल) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में श्री मीठालाल, विजयकुमार, हिम्मतकुमार, विनोदकुमार मुणोत, बोराणा (राज.) मनली-चेन्नई एवं श्री धनराज, अशोककुमार, निर्मलकुमार, करण, तेजस्व धारीवाल, चतराजी का गुड़ा (राज.) मुथियालपेठ-चेन्नई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- कु. श्रद्धा गेलड़ा (सुपुत्री श्री ऋषभकुमार गेलड़ा, शहादा) के जैन विद्या परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में श्री पुष्पलाल-चन्द्रकला, ऋषभ, वर्धमान, श्रेयांश एवं शासन गेलड़ा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. प्रज्ञ गुन्देचा के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में दादाश्री फतेहलालजी, दादी श्रीमती मांगीदेवी, पिताश्री अनिलजी एवं मां श्रीमती पवन गुन्देचा, बोरज-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. दीपक (सुपुत्र-श्री गौतमचन्दजी कांकरिया, रामसिंह का गुड़ा-चेन्नई) सह सौ. रुचिका (सुपुत्री-श्री चैनसुखजी सोनी, कांकरोली-तिरुवोत्तियुर) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में श्री गौतमचन्द, ललितकुमार कांकरिया एवं श्री चैनसुखजी, राहुल सोनी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्वर्गीया मातुश्री बदामबाई (धर्मपत्नी-स्व. श्री धर्मचन्दजी हिरण, आमेट) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू श्री नयनचन्द-मूलीदेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू भूपेन्द्रकुमार-लता, ललितप्रकाश-शिल्पा, प्रपौत्री एवं प्रपौत्र प्रेक्षा, रिद्धि, अदित, प्रांजल हिरण, बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती छोटाकंवर सुराना (धर्मपत्नी-श्री सुरेशचन्द सुराना, भोपालगढ़-इन्दोर) की पुण्यस्मृति में श्री प्रसन्नचन्द, सुरेशचन्द, विनोद, मितेश, संयम सुराना द्वारा प्रदत्त।

● विज्ञप्ति क्रमांक २० में पंक्ति को इस प्रकार पढ़ें--सुपौत्र आनंद, मोहित, प्रवेश, शुभम व संस्कार दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा

२५ सितम्बर २०११ को पूरे देश में निर्धारित केन्द्रों पर ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा आयोजित हो रही है। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ-महासभा ने जानकारी दी है कि परमपूज्य आचार्यश्री की सेवा में पहुंचने वाले परीक्षार्थी केलवा में भी परीक्षा दे सकते हैं। शिक्षकों के लिए केन्द्रीय शिविर १७-१६ सितम्बर को केलवा में आयोज्य है। मेवाड़ संभाग और अन्य क्षेत्रों के परीक्षार्थी इसमें भाग ले सकते हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति पो. केलवा-३१३ ३३४, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०२६२००५५३८१, ०९३५२४०४६४१ दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ नोरतनमल दूगड़ (अध्यक्ष) फोन : ९२१४५१२३४६ बच्छराज कठोतिया (मंत्री) फोन : ९३११२३४६४१
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**

www.terapanthinfo.com